बजरंग बाण

Traditional, author unknown · rashikundli.com

निश्चय प्रेम प्रतीति ते,
बिनय करैं सनमान
तेहि के कारज सकल शुभ,
सिद्ध करैं हनुमान
जय हनुमंत संत हितकारी,
सुन लीजै प्रभु विनय हमारी
जन के काज विलंब न कीजै,
आतुर दौरि महा सुख दीजै
जैसे कूदि सिंधु के पारा,
सुरसा बदन पैठि बिस्तारा
आगे जाय लंकिनी रोका,
मारेहु लात गई सुरलोका
जाय विभीषन को सुख दीन्हा,
सीता निरखि परमपद लीन्हा
बाग उजारि सिंधु महँ बोरा,
अति आतुर जमकातर तोरा
अक्षय कुमार मारि संहारा,
लूम लपेटि लंक को जारा
लाह समान लंक जरि गई
जय जय धुनि सुरपुर नभ भई
अब बिलंब केहि कारन स्वामी,

कृपा करहु उर अंतरयामी

जय जय लखन प्राण के दाता,

आतुर ह्वै दुख करहु निपाता

जय हनुमान जयति बलसागर,

सुर समूह समरथ भटनागर

ॐ हनु हनु हनु हनुमंत हठीले,

बैरिहि मारु बज्र की कीले

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमंत कपीसा

ॐ हुं हुं हुं हनु अरि उर सीसा

जय अंजनि कुमार बलवंता,

शंकर सुवन वीर हनुमंता

बदन कराल काल कुल घालक,

राम सहाय सदा प्रतिपालक

भूत प्रेत पिसाच निसाचर,

अगिनि बेताल काल मारी मर

इन्हें मारु तोहि सपथ राम की,

राखु नाथ मरजाद नाम की

सत्य होहु हरि सपथ पाइ कै

राम दूत धरु मारु धाइ कै

जय जय जय हनुमंत अगाधा,

दुःख पावत जन केहि अपराधा

पूजा जप तप नेम अचारा,

नहिँ जानत कछु दास तुम्हारा

बन उपबन मग गिरि गृह माहीं,

तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं

जनकसुता हरि दास कहावौ,

ताकी सपथ विलंब न लावौ

जै जै जै धुनि होत अकासा,

सुमिरत होय दुसह दुख नासा

चरन पकरि कर जोरि मनावौं,

यहि औसर अब केहि गोहरावौं

उठु उठु चलु तोहि राम दुहाई

पायँ परौं कर जोरि मनाई

ॐ चं चं चं चं चपल चलंता,

ॐ हनु हनु हनु हनु हनुमंता

ॐ हं हं हाँक देत कपि चंचल,

ॐ सं सं सहमि पराने खल दल

अपने जन को तुरत उबारौ,

सुमिरत होय आनंद हमारौ

यह बजरंग बाण जेहि मारै,

ताहि कहौ फिरि कवन उबारै

पाठ करै बजरंग बाण की,

हनुमत रक्षा करै प्रान की

यह बजरंग बाण जो जापै,

तासौं भूत प्रेत सब कांपै

धूप देय जो जपै हमेसा,

ताके तन नहिँ रहै कलेसा

उर प्रतीति दृढ़, सरन ह्वै

70 पाठ करै धरि ध्यान

71 बाधा सब हर, करैं

72 सब काम सफल हनुमान

यह पाठ कहाँ से लिया गया है: StotraNidhi
RashiKundli संपादकीय टीम द्वारा लिखित और समीक्षित · rashikundli.com